मुहावरे एवं लोकोक्ति

मुहावरा– कोई भी ऐसा वाक्यांश जिसका शब्दार्थ ग्रहण न करके कोई विलक्षण अर्थ ग्रहण किया जाता हो, वह मुहावरा कहलाता है।

लोकोक्ति – यह वास्तव में वह तीखी युक्ति है जो श्रोता के हृदय पर सीधा प्रभाव डालती है। इसे कहावत, प्रवाद, वाक्य, जनश्रुति आदि नामों से भी संबोधित किया जाता है।

मुहावरा और लोकोक्ति में अंतर

मुहावरा वाक्यांश है और इसका स्वतन्त्र रुप से प्रयोग नहीं किया जा सकता। लोकोक्ति सम्पूर्ण वाक्य है और इसका प्रयोग स्वतन्त्र रुप से किया जा सकता है। जैसे – 'होश उड़ जाना' मुहावरा है। 'बकरे की मां कब तक खैर मनाएगी' लोकोक्ति है।

समानता :

1. दोनों ही गंभीर और व्यापक अनुभव की उपज है।
2. दोनों की सार्थकता प्रयोग के बाद सिद्ध होती है।

- अक्ल पर पत्थर पड़ना – बुद्धि भ्रष्ट होना
- अंडे सेना – घर में बेकार बैठना
- जूतम पैजार–लड़ाई–झगड़ा होना
- अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता – अकेला व्यक्ति शक्तिशाली नहीं होता।
- पौ बारह होना – अत्यधिक लाभ लेना
- बांझ क्या जाने प्रसव की पीड़ा–जिस पर बीतती है, वही जानता है।
- कान का कच्चा होना–सुनी–सुनायी बातों पर विश्वास करना
- खिचड़ी पकाना – किसी षड्यंत्र की तैयारी करना
- नीम हकीम खतरे जान – अल्प ज्ञान हानिकारक होता है।
- छाती पर मूँग दलना : बहुत परेशान करना
- कान में तेल डालना : कुछ न सुनना
- गाँठ में बाँधना : खूब याद करना
- घड़ी में तोला घड़ी में माशा : जरा सी बात पर खुश नाराज होना
- कलेजा पसीज जाना : द्रवित हो जाना
- आँख उठाकर भी नहीं देखा : ध्यान तक न देना
- नाक रगड़ना : विनती करना
- सब्जबाग दिखाना : झूठा आश्वासन देना
- अठखेलियाँ सूझना : दिल्लगी करना
- आपे में नहीं रहना : अपनी सुध खो देना
- औंधी खोपड़ी : निपट मूर्ख
- आँख के अंधे, गाँठ के पूरे : धनी परन्तु मूर्ख
- चोर के पैर नहीं होते : दोषी व्यक्ति अपने आप फँसता है।
- पेट भरे मन–मोदक से कब : केवल सोचते रहने से किसी काम में सफलता न मिलना
- अरहर की टट्टी गुजराती ताला : छोटी वस्तु के लिये अधिक व्यय करना
- न नौ मन तेल होगा और न राधा नाचेगी : असंभव कार्य
- अधजल गगरी छतकत जाए : ओछा आदमी थोड़ा गुण या धन होने पर भी इतराने लगता है।
- खेत रहना : युद्ध में शहीद होना
- कलई खुलना : सच्चाई का पता लगना
- कहाँ राजा भोज, कहाँ गंगू तेली : छोटी आदमी की बड़े आदमी से क्या तुलना
- सिर उठाना : विद्रोह करना
- आँख की किरकिरी होना : अप्रिय लगना
- जादू वही जो सिर चढ़कर बोले : उपाय वही सही होता है जिसका लोहा विरोधी भी माने
- नौ दिन चले अढ़ाई कोस : धीरे–धीरे चलना
- कड़ाही से गिरा चूल्हे में आ पड़ा – एक विपत्ति से छूटकर दूसरी में आ पड़ना
- ओछे की प्रीति बालू की भीति – बालू की दीवार की भाँति ओछे लोगों का प्रेम अस्थायी होता है।
- जूतियों में दाल बांटना – लड़ाई–झगड़ा हो जाना
- घड़ों पानी पड़ना : लज्जित होना
- जहाँ न पहुंचे रवि, वहां पहुंचे कवि : कवि बहुत कल्पनाशील होते हैं
- पढ़े फारसी बेचे तेल, यह देखो कुदरत का खेल : योग्यता होते हुए भी विवशता के कारण निम्न स्तर का कार्य करना
- चाँद पर थूकना : निर्दोष पर कलंक लगाना/सम्माननीय का अनादर करना
- खरगोश के सींग निकलना : असंभव होना
- पानी से घी निकालना : असंभव होना
- बालू से तेल निकालना : असंभव होना
- लोहा लेना : शत्रु से मुकाबला करना
- काठ का उल्लू होना : बड़ा मूर्ख होना
- तू डाल–डाल, मैं पात–पात : चालाकी का जवाब चालाकी से देना
- सिर खपाना : सोच विचार करना
- तन पर नहीं लत्ता, पान खाये अलबत्ता : झूठा दिखावा करना
- सोने में सुगन्ध : सुन्दर वस्तु में और गुण होना
- नई जमीन तोड़ना – अनूठा प्रयोग
- तीर मारना : बड़ा काम करना
- छाती पर मूँग दलना : अधिक परेशान करना
- कोई तीर घाट तो कोई बीर घाट : ताल मेल न होना
- तिल का ताड़ बनाना : छोटी सी बात को बढ़ा देना
- अंतर के पट खोलना : विवेक से काम लेना
- अंगूठी का नग होना : बहुत कीमती
- समुद्र मंथन करना : कठोर परिश्रम करना
- एड़ी चोटी का जोर लगाना : बहुत परिश्रम करना
- लुटिया डूब जाना : पूर्णतः हार जाना
- ढपोर शंख – बेवकूफ
- तिलांजलि दे दी – पूर्णतः मुक्त होना
- सिर आँखों पर बिठाना : हृदय से सेवा सत्कार करना
- लंगोटी में फाग : दरिद्रता में आनंद मनाना
- अंधेरी नगरी : अन्याय की जगह
- माँगे भीख पूछे गाँव की जमा : अपनी असलियत भूलकर बात करना

EduBull.com

- अपनीढपली अपना राग : सबका अपने–अपने मन के अनुसार चलना
- हँसुए के ब्याह में खुरपी का गीत : असंगत बातें करना
- जाके पाँव न फटे बिवाई सो क्या जाने पीर पराई : जिसके ऊपर बीतती है वही जानता है
- सावन के अंधे को हरा ही हरा नजर आता है : सुखी को सब जगह सुख ही दिखाई पड़ता है
- तबेली का बला बन्दर के सिर : किसी का अपराध दूसरे के लिए
- गये थे रोजा छुड़ाने, नमाज गले पड़ी : उपहार करने के बदले स्वयं को दुःख भोगना पड़ा
- गंगा गये गंगादास जमुना गये जमुनादास : जिसका कोई दृढ़ सिद्धांत नहीं होता
- टूट चाप नहिं जुरै रिसाने : नुकसान हो जाने पर क्रोध करना व्यर्थ है।
- घर का जोगी जोगड़ा आन गाँव का सिद्ध : घर के ज्ञानी को सम्मान नहीं
- कोयले की दलाली में मुंह काला : बुरे काम से बुराई मिलना
- हथेली पर सरसों नहीं जमती : काम इतनी जल्दी नहीं हो जाता (दुष्कर कार्य)
- तालु में जीभ न लगना : चुप न रहना
- अपना उल्लू सीधा करना : स्वार्थपूर्ति
- तूती बोलना : किसी भी क्षेत्र में अमिट प्रभाव छोड़ना
- तेली का बैल होना : बुरी तरह काम में लगे रहना
- आधा तीतर आधा बटेर : बेमेल तथा बेढंगा होना
- गूलर का फूल होना : कभी भी दिखाई न देना
- घाट–घाट का पानी पीना : बहुत अनुभवी होना
- काठ की हाँडी बार–बार नहीं चढ़ती : छट–कपट का व्यवहार हमेशा नहीं चलता
- न उधो का लेना न माधो को देना : अपने काम से काम
- पुचकारता कुत्ता सिर चढ़े : ओछे लोग मुंह लगाने पर अनुचित लाभ उठाते हैं
- आँख का नीर ढल जाना : निर्लज्ज हो जाना
- तोते की तरह आँखें फेरना : पुराने सम्बन्धों को एकदम भुला देना
- मखमली जूते मारना : मीठी बातों से लज्जित करना
- दाम लगाना : मूल्य आंकना
- चांदी का ऐनक लगाना : किसी न किसी प्रकार प्रतिष्ठा बनाए रखना
- रीढ़ टूटना : निराश हो जाना
- सुबह शाम करना : टाल मटोल करना
- हाथ ऊँचा होना : दान आदि के लिए मन में उदारता का भाव होना
- अंधे के हाथ बटेर लगना : किसी वस्तु का अनायास मिलना
- कलेजा होना : हिम्मत होना
- हाथ उठाकर देना : स्वेच्छा से किसी को कुछ देना
- पानी न माँगना : तत्काल मर जाना

EduBull.com